



महुआ के गुण

महुआ के वृक्ष को गैस, पित्त एवं कफ आदि में प्रयोग किया जाता है। यह वीर्य एवं धातु को बढ़ाने और पुष्ट करने का काम भी करता है। थकावट को दूर करने, फोड़ों के घाव भरने आदि में भी यह काम आता है। पेट में वायु विकार को कम करने में भी इसका प्रयोग होता है। इसका फूल शीतल एवं लाभकारी होता है। यह गर्मी व जलन को कम करता है। इसका प्रयोग लो-ब्लड प्रेशर, फोड़ों-फुंसी, स्तनों में दूध को बढ़ाने, गैस के विकार, वातशूल, अनियमित मासिक धर्म, बवासीर, खांसी, नपुंसकता, कमजोरी, टी.बी., सांस के रोग, खून की खराबी आदि रोगों को दूर करने में किया जाता है।

महुआ का महत्व

विष्णु के. सोलंकी*, वनीता परते* और आर. बाजपेयी*

मध्य प्रदेश में पाए जाने वाले वृक्षों में महुआ एक बहुत ही उपयोगी वृक्ष है। यह शराब के लिए लोकप्रिय है। यह इसके फूलों से तैयार की जाती है। जब महुआ पर फूल आने शुरू होते हैं, तो पूरा जंगल इसकी मादक खुशबू से महक जाता है। यह एक उष्णकटिबंधीय वृक्ष है, जो उत्तर भारत में मिलता है। यह मैदानी इलाकों एवं जंगलों में भी पाया जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम *मधुका लांगीफोलिया* है एवं यह सपोटेसी फैमिली में आता है। इसे बटर-ट्री के नाम से भी जाना जाता है। महुआ बहुत धीमी गति से बढ़ता है और मुश्किल से लगता भी है, जब एक बार लग जाता है, तो लंबे समय तक जीवित रहता है। यह एक पर्णपाती और अच्छी ऊंचाई वाला वृक्ष है। जब इसकी पत्तियां तोड़ते हैं, तो इसमें से एक दूध जैसा स्राव निकलता है। यह एक पर्णपाती वृक्ष है और इसलिए इसकी पत्तियां फरवरी से अप्रैल में झड़ जाती हैं। इसके बाद इसमें नई पत्तियां आती हैं, जो कि गुलाबी रंग की होती हैं। इसके फूल सफेदी लिए हुए रसयुक्त एवं मीठे होते हैं।

गर्म क्षेत्रों में महुआ को उगाया जाता है। इससे लकड़ी, फूल एवं तैलीय बीज की प्राप्ति होती है। कच्चे फलों की सब्जी बनाई जाती है और पके फलों का गूदा खाने के काम में लिया जाता है, जो कि मीठा होता है। इसके तेल का प्रयोग त्वचा की देखभाल, साबुन, डिटरजेंट आदि बनाने में किया जाता है। सामान्य तापमान पर इसका तेल जम जाता है। इसके तेल का प्रयोग वनस्पति मक्खन के रूप में भी किया जाता है। इसी के साथ ईंधन तेल के रूप में भी महुआ का उपयोग किया जाता है। तेल निकालने के बाद इसकी जो खली बच जाती है, उसको पशुओं के

खाने तथा साथ ही खाद के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। इसके सूखे फूलों का उपयोग मेवों के लिए किया जाता है और फूलों का सबसे ज्यादा प्रयोग तो शराब बनाने के लिए किया जाता है। इसी के साथ इसमें बहुत सारे औषधीय गुण भी विद्यमान हैं। आदिवासी समुदायों में इसकी उपयोगिता के कारण इसको बहुत पवित्र वृक्ष माना जाता है। इसका उपयोग हरी एवं सूखी अवस्था दोनों रूपों में प्रयोग किया जाता है। हरे फूलों से रस निकालकर इसकी पूरियां बनाई जाती हैं। आटे में पीसकर इसकी रोटियां भी बनाई जाती हैं। महुआ को हरे या सूखे दोनों तरह से भूनकर भी लोग खाते हैं। यह गरीबों के लिए बहुत ही उपयोगी है। यह गायों और

भैंसों को भी खिलाने के काम में लिया जाता है और दूध उत्पादन भी बढ़ता है। इससे जैम भी बनाया जाता है। महुआ के सूखे फूलों को बहुत दिनों तक रखा जा सकता है।

महुआ के फूलों को शराब बनाने के काम में लिया जाता है। भारत के बहुत से स्थानों पर महुआ की शराब बहुत ही लोकप्रिय पेय है। मध्य प्रदेश के झाबुआ नामक स्थान पर यह बहुत पसंद की जाती है।

महुआ का प्रवर्धन

इसके फूल मार्च से अप्रैल तक आते हैं और इसके एक फल में एक से चार तक



तैयार महुआ उपज

बीज होते हैं। जून-अगस्त में इसके फल पकते हैं। इसका बीज 3 से 4 सें.मी. लंबा होता है और इसको काटने पर इसमें से दूध के जैसा स्राव निकलता है। यह प्रकृति में साधारणतः बीजों से ही प्रवर्धित होता है। इसमें अधिक तापमान को सहन करने की क्षमता होती है तथा गहरी दोमट मृदा महुआ की वृद्धि के लिए बहुत अच्छी है। लवणीय एवं क्षारीय मृदाओं के सुधार के लिए यह बहुत ही उपयोगी वृक्ष है।

*कृषि कॉलेज, जबलपुर, जेएनकेवीवी (मध्य प्रदेश)